डिजिटल करंसी का वक्त

डिजिटल करंसी के लिए कानून में भी बदलाव करना होगा। इसलिए ई–रुपया आने में वक्त लग सकता है। इसके बावजूद इस दिशा में पहल करने के लिए उसकी तारीफ होनी चाहिए। वैसे, चीन अपनी डिजिटल करंसी ई–युआन के पायलट प्रॉजेक्ट पिछले साल से ही चला रहा है।

रमन कपूर।।

भारतीय रिजर्व बैंक सेंट्रल बैंक डिजिटल करंसी (सीबीडीसी) पर काम कर रहा है। यह रुपये का इलेक्ट्रॉनिक रूप होगा। यह उसी तरह से काम करेगा, जैसे पेटीएम, ऐमजॉन पे, गूगल पे जैसे ऑनलाइन पेमेंट सिस्टम काम करते हैं। यानी आप अपने फोन से ई–रुपये में भुगतान, पैसा ट्रांसफर कर सकेंगे। आरबीआई ने कहा, श्हर आइडिया को सही वक्त का इंतजार करना पड़ता है। शायद डिजिटल करंसी का वक्त आ गया है। उसका कहना है कि इससे कैश पर निर्भरता घटेगी। नोट छापने का खर्च बचेगा। नकद लेनदेन के सेटलमेंट में आसानी होगी और जहां विदेशी मुद्रा का लेनदेन होगा, वहां टाइम जोन यानी अलग–अलग वक्त होने से सेटलमेंट में देरी नहीं होगी। लेकिन रिजर्व बैंक को अभी इसके कई पहलुओं पर काम करना है। उसने यह भी तय नहीं किया है कि इसे सिर्फ होलसेल बिजनेस ट्रांजैक्शन के लिए लाया जाए या आम लोगों के लिए भी?

डिजिटल करंसी के लिए कानून में भी बदलाव करना होगा। इसलिए ई–रुपया आने में वक्त लग सकता है। इसके बावजूद इस दिशा में पहल करने के लिए उसकी तारीफ होनी चाहिए। वैसे, चीन अपनी डिजिटल करंसी ई–युआन के पायलट प्रॉजेक्ट पिछले साल से ही चला रहा है और दुनिया की पहली ऐसी मुद्रा का श्रेय बहामास को मिला है, जिसने अक्टूबर 2020 में डिजिटल करंसी लॉन्च की थी। दुनिया में 86 फीसदी सेंट्रल बैंक इस पर रिसर्च कर रहे हैं और 14 फीसदी ने इसके लिए पायलट प्रॉजेक्ट शुरू किए हैं। दुनिया भर में डिजिटल करंसी को लेकर दिलचस्पी और तेजी फेसबुक के लिब्रा लॉन्च करने के ऐलान के बाद आई थी। सोशल मीडिया कंपनी ने कहा था कि वह लिब्रा नाम की वैश्विक डिजिटल करंसी लाएगी, जिससे खासतौर पर विकासशील देशों में लेनदेन की लागत कम होगी और उन लोगों की जिंदगी आसान होगी, जिनकी बैंकों तक पहुंच नहीं है।

अमेरिका सहित दुनिया के कई देशों के इसका विरोध करने के बाद कंपनी ने योजना को ठंडे बस्ते में डाल दिया। केंद्रीय बैंकों को इससे पहले से बिटकॉइन जैसी वर्चुअल करंसी से चुनौती मिल रही है। वर्चुअल करंसी का इस्तेमाल आज सट्टेबाजी, मनी लॉन्ड्रिंग और टेरर फंडिंग तक के लिए हो रहा है और सरकारी एजेंसियों के लिए इन्हें ट्रैक करना बहुत मुश्किल है।

भारत जैसे देशों में भी इस तरह की करंसी में खासतौर पर छोटे समय के निवेश से पैसा बनाने को लेकर दिलचस्पी बढ़ी है, जबकि सरकार और रिजर्व बैंक इन्हें बढ़ावा नहीं देना चाहते। केंद्र ने वर्चुअल करंसी पर पाबंदी लगाने के लिए एक विधेयक भी तैयार किया है, जिसे वह मॉनसून सत्र में पास कराना चाहती है। ऐसे में डिजिटल करंसी लाकर वर्चुअल पेमेंट के लिए लोगों को एक विकल्प देना अच्छी पहल होगी। यह बात और है कि इससे बैंकिंग उद्योग के लिए जो चुनौतियां खड़ी होंगी, उनके समाधान का रास्ता भी रिजर्व बैंक को तलाशना होगा।

दण्ड

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

भरे दरबार में इसने किस प्रकार मेरी उपेक्षा की तथा उद्धत भाव से मेरा अपमान किया। श्रीराम ने कहा– गुरुदेव शांत हो जाइए। मैं हनुमान से इस धृष्टता का कारण पूछूंगा। विश्वामित्र का क्रोध शांत नहीं हुआ, उन्होंने कहा–यह तो आपने प्रत्यक्ष देखा, पूछने की क्या आवश्यकता है? अस्त्र–शस्त्र के क्षेत्र में मैं तुम्हारा गुरु रहा हूँ। यह गुरु–आज्ञा है, इसे दण्ड दीजिये। नारद ने भी विश्वामित्र की हाँ में हाँ मिलाई तथा कहा – भगवान! विश्वामित्र ठीक कहते हैं। हनुमान ने इनका प्रत्यक्ष अपमान किया है। आपके उदण्ड सेवक को दण्ड मिलना चाहिए। नारद की बार सुनकर हनुमान असमंजस में पड़ गए। भरे दरबार में अपनी स्थिति देखकर कुछ बोल तो न सके, पर सोचने लग गए कि जिस नारद के कहने से मैंने ऐसा किया।

संपादकीय

गेंदबाजी का डर

चलते–चलते एक और बात आप लोगों को बता दूं। किस्सा यूं है कि एक बार पंजाब की कप्तानी करते हुए सिद्धू टॉस के लिए गए। टॉस जीतने के बाद उन्होंने पिच पर हरी घास देखते हुए पहले गेंदबाजी करने का फैसला कर लिया, जबकि टीम मीटिंग में तय हुआ था कि पहले बल्लेबाजी करनी है क्योंकि पिच पर आखिर के दो दिन स्पिन गेंदबाजों को जबरदस्त मदद मिलेगी। यही नहीं, सिद्धू जब ड्रेसिंग रूम में पहुंचे तो वहां यह दलील दे डाली कि टॉस विरोधी टीम ने जीता। लेकिन, इसका भांडा मैच के दौरान दूसरे दिन फूट गया, जब विरोधी टीम के खिलाड़ी ने कहा कि इस पिच पर तुम्हारे कप्तान ने पहले गेंदबाजी करने का फैसला सिर्फ खुद को तेज गेंदबाजों से बचाने के लिए किया। सिद्धू पहले से ही सौरव गांगुली और सचिन तेंदुलकर जैसे खिलाड़ियों को वर्ल्ड कप के दौरान नाराज कर चुके थे। पहले मैच में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ हार के बाद सिद्धू ने तीखे कॉमेंट्स किए थे। माना जाता है कि इन घटनाओं के चलते ही सिद्धू का करार उस टीवी चैनल के साथ हमेशा के लिए खत्म हो गया। हालांकि इस बात की पुष्टि न तो सिद्धू ने की, न विल्किंस ने और न ही चैनल ने। क्रिकेट के दिनों के ये किस्से शायद यह बताने के लिए काफी हों कि सिद्धू भले ही अब फुलटाइम नेता बन गए हों, लेकिन उनकी शख्सियत का एक बड़ा हिस्सा अब भी वैसा ही दिखता है, जैसा क्रिकेटर के तौर पर दिखता था।

‘क्या सर, आपको लगता है कि सिद्धू को आप इतनी आसानी से सिर्फ बढ़ी हुई फीस देकर हमारे खेमे से निकाल ले जाएंगे? उनके साथ हमने कई साल बिताए हैं। हम जानते हैं कि उनसे यू-टर्न कैसे कराना है और वह हम करा चुके हैं।’

एक्सपर्ट का यूटर्न

विमल कुमार।।

टीम इंडिया के पूर्व ओपनर नवजोत सिंह सिद्धू आज मंजे हुए राजनेता हैं। कभी वह बेहद शांत और विनम्र खिलाड़ी हुआ करते थे। सच पूछिए तो सिद्धू शायद हमेशा से दोहरी शख्सियत वाले इंसान रहे हैं। जब मैंने पत्रकारिता में कदम रखा, तब तक सिद्धू रिटायर हो चुके थे। पीछे अपने किस्से छोड़कर, जिन्हें मैं उनके साथी खिलाड़ियों से सुनता आया हूं। उनकी चर्चा बाद में करेंगे। सबसे पहले वह किस्सा सुनाता हूं, जिसका मैं गवाह रहा हूं।

साल 2004 की बात रही होगी। मैं तब देश के नंबर वन टीवी चैनल में काम करता था। अचानक एक दिन वहां शाम को रहस्यमय अंदाज में सिद्धू की एंट्री हुई। मेरे खेल संपादक ही नहीं, चैनल संपादक भी सिद्धू के साथ मीटिंग में थे। थोड़ी देर में तय हो गया कि अगले महीने से वह हमारे न्यूज चैनल के साथ क्रिकेट जानकार के तौर पर जुड़ जाएंगे। इस करार से सब खुश थे क्योंकि हमारा संस्थान विरोधी चैनल के खेमे से क्रिकेट का एक बड़ा चेहरा अपनी तरफ खींचने में कामयाब हो गया था। लेकिन उस रात सिद्धू ने करार पर दस्तखत नहीं किए। वजह बताई कि गुरुवार है, जो उनके लिए शुभ दिन नहीं है। अगले दिन वह साइन की हुई करार की कॉपी हमारे दफ्तर भेज देंगे। दफ्तर

में सिद्धू के आने की खबर अभी टॉप अधिकारियों तक भी नहीं पहुंची थी कि हमारे संपादक के पास विरोधी चौनल के एक बहुत सीनियर अधिकारी का फोन आया। उन्होंने हंसते हुए बताया, ‘क्या सर, आपको लगता है कि सिद्धू को आप इतनी आसानी से सिर्फ बढ़ी हुई फीस देकर हमारे खेमे से निकाल ले जाएंगे? उनके साथ हमने कई साल बिताए हैं। हम जानते हैं कि उनसे यू–टर्न कैसे कराना है और वह हम करा चुके हैं।’

सिद्धू ने हमारे न्यूज चैनल के साथ हुई डील का दस्तावेज विरोधी चैनल के मालिक को दिखा दिया था। उन्होंने वहां अपनी फीस बढ़वा ली, यह दलील देकर कि अगर आप मुझे इतने पैसे नहीं देंगे तो मैं दूसरे खेमे में चला जाऊंगा। मजबूरी में उस चैनल के मालिक ने पुराने रिश्तों और सिद्धू की साख का खयाल रखते हुए उनकी बात मान ली। सिद्धू उस दिन अपना निजी फायदा तो कर गए, लेकिन दोनों ही संस्थानों के बड़े अधिकारियों के सामने अपना कद छोटा कर गए।

मुहावरों के इस्तेमाल के चलते सिद्धू ने कॉमेंट्री का एक अनोखा व्याकरण गढ़ा और बेहद कामयाब हुए। सुनील गावस्कर और रवि शास्त्री जैसे लोग भी हैरान थे कि आखिर ‘शेरी’ ने कुछ सालों में अपने अंदर ऐसा चमत्कारी बदलाव कैसे कर लिया। यही बात राहुल द्रविड़ ने श्रीलंका के एक दौरे पर हम पत्रकारों के साथ साझा की थी, जब उन्हें पता चला कि पूर्व ओपनर अब एक न्यूज चैनल के साथ जुड़ गए हैं। द्रविड़ का कहना था कि एक जमाने में सिद्धू विदेश दौरे पर उनके रूम पार्टनर हुआ करते थे और पूरे दौरे में वह बमुश्किल 30 वाक्य भी नहीं बोलते थे। जब अचानक एक दिन 30 मिनट के कार्यक्रम में द्रविड़ ने उन्हें बेधड़क, बिना रुके 60 से ज्यादा वाक्य बोलते देखा तो उनके लिए यकीन करना मुश्किल हो रहा था कि ये वही सिद्धू हैं। क्रिकेट कमेंट्री में सिद्धू को मुंहमांगी कीमत मिल रही थी, लेकिन धीरे–धीरे उनके काम की शैली को लेकर शिकायतें बढ़ने लगीं। फिर सिद्धू ने इंग्लैंड के पूर्व खिलाड़ी और साथी कॉमेंटेटर एलन विल्किंस के साथ ऑन एअर बदतमीजी की। यह 2003 वर्ल्ड कप के बाद की घटना थी।

सूडोकु नवताल-5321

मध्यम

8		4	3	9	7	5		6
3					2			
		7	6	5				4
9	6		5			1		7
5		1	4		9	8		2
4		8					5	3
2				6	1	4		
			7					8
7		9	8	3	5	6		1

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5320 का हल

7	8	4	9	5	2	6	1	3
9	6	2	4	3	1	8	5	7
1	3	5	7	8	6	2	4	9
4	2	3	8	1	5	9	7	8
8	5	9	2	4	7	1	3	6
6	7	1	3	9	8	4	2	5
3	1	7	6	6	4	5	9	2
5	9	6	1	2	3	7	8	4
2	4	8	5	7	9	3	6	1

अपना ब्लॉग

कई बार टीम को मझधार में छोडा

मोहन। सिद्धू के बारे में एक और बात क्रिकेट सर्कल में मशहूर है कि वह ओपनर तो शानदार थे, लेकिन कई बार टीम को उस वक्त मझधार में छोड़ देते थे, जब उनकी सबसे ज्यादा जरूरत होती थी। 1987 वर्ल्ड कप में सिद्धू ने वापसी की थी, लेकिन जब कुछ ही महीने बाद वेस्टइंडीज की आक्रामक तेज गेंदबाजी के खिलाफ टीम इंडिया को उनकी सबसे ज्यादा जरूरत थी तो रहस्यमय अंदाज में चोटिल होकर सीरीज से बाहर हो गए। 1992 में साउथ अफ्रीका के मुश्किल दौरे से ठीक पहले भी ऐसा ही हुआ। 1996 में इंग्लैंड दौरे के बीच में से ही वापस लौटने का किस्सा तो सबको पता ही है। इस दौरान कई ऐसे मैच और सीरीज आए, जहां विरोधी टीम के पास कोई खूंखार तेज गेंदबाज होता तो सिद्धू गायब हो जाते थे। सिद्धू पहले से ही सौरव गांगुली और सचिन तेंदुलकर जैसे खिलाड़ियों को वर्ल्ड कप के दौरान नाराज कर चुके थे। पहले मैच में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ हार के बाद सिद्धू ने तीखे कॉमेंट्स किए थे।